गुरमत संगीत की विलक्षण गायन शैली : पड़ताल

डॉ. हरजस कौर
सह–आचार्य, राजकीय महाविद्यालय, रूपनगर

पड़ताल, गुरमत संगीत का एक विशिष्ट और अप्रसिद्व काव्य रूप है। वर्तमान समय में पड़ताल शैली का भारतीय संगीत में प्रचलन नहीं है परन्तु पुरातन भारतीय संगीत ग्रंथों में पंचतालेश्वर नामक गायन शैली के साथ इसका अस्पष्ट तौर से संबंध जोड़ा जाता है।[1] गुरमत संगीत के आधार ग्रंथ, श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भिन्न–भिन्न रागों अधीन श्री गुरू रामदास जी की 19 और श्री गुरू अर्जुन देव जी की 36 पड़तालें दर्ज हैं।

पड़ताल शब्द की रचना पड़+ताल शब्दों के मेल से हुई है। इसके शाब्दिक अर्थों को देखा जाए, तो पड़ताल से भाव शब्द का पाठ ताल के आधार पर किया जाए। पड़ताल को पट ताल, परत ताल, पंच ताल, पड़त ताल आदि नामों से सम्बोन्धित किया जाता है। एक शब्द या पद की अलग–अलग तुकों को अल्ल– अलग तालों में गाने को 'पड़ताल' कहा जाता है। जैसे एक बन्दिश में अलग–अलग रागों के प्रयोग को राग सागर या राग माला कहते हैं, उसी तरह एक बन्दिश में अलग–अलग तालों के अंतर्गत गायन करना 'पड़ताल' है।[2] गुरमत संगीत की विशिष्ट गायन शैलियों की तरह इस गायन शैली पड़ताल का स्वरूप समय के काल चक्र में अप्रचलित हो गया। इस शैली के तालों से सम्बन्धित संगीतकारों में मत भेद हो गए। भाई काहन सिंह नाभा के अनुसार, 'यह छंद जाति नहीं, किंतु चारताल का भेद पटताल है, इस ताल में गाए जाने वाले पदों की 'पड़ताल' संज्ञा हो गई है, बेशक वह किसी धारणा के हों।'[3] पर पड़ताल को चारताल का भेद पटताल नहीं माना जा सकता क्योंकि श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज पड़ताल के संबंध में तीन प्रकार के सिरलेख अंकित हैः–

– कानड़ा महला 4 पड़ताल घुर 5[4]

– प्रभाती महला 5 बिभास पड़ताल[5]

– सारंग महला 4 घुर दुपदे पड़ताल[6]

उपरोक्त सिरलेखों से स्पष्ट है कि राग, महला, घरु, कावि रूप और पड़ताल अलग–अलग संकेत हैं। पड़ताल को यदि चारताल का भेद पटताल मान लें तो घुर के संबंध में प्रचलित मत मूल से ही गलत सिद्व हो जाता है। यहाँ घुर 15, 13, 5 आदि

प्रयोग किए गए हैं जो इस बात का संकेत हैं कि पड़ताल में केवल किसी एक ताल का संकेत नहीं। प्राचीन कीर्तनकारों के अनुसार पड़ताल को पांच तालों के अंतर्गत गायन करना है। कुछ रागी यह विचार मानते हैं कि इसका आरम्भ पांच ताल की सवारी से ही करना है। इन विचारों को छोड़ कर सर्व प्रमाणित विचार के अनुसार इस शैली में तालों का परताव और तालों की गिनती पांच होनी चाहिए। पड़ताल शैली के संबंध में उपरोक्त चिन्ह उपलब्ध होते हैं–

– पड़ताल से भाव वह शब्द रचना जिस में तालों को बदल–बदल कर प्रयोग किया जाता है।

– पड़ताल अधीन शब्द की स्थाई की तुक के लिए एक ताल ही रहता है पर अन्तरे की तुकों को गायन करने के लिए अलग–अलग पांच तालों का प्रयोग किया जाता है।

– भारतीय संगीत में पड़ताल गायकी का प्रचलन नहीं है।

पड़ताल में प्रयोग किये जाते शब्दों की लयात्मिकता, विभिन्न तालों के प्रयोग से यह देखना जरूरी है कि भारतीय छंद विधान अनुसार पड़ताल किस छंद के साथ समानता रखती है। भारतीय कवि शास्त्र अनुसार संगीत छंद ऐसा छंद है जिसमें वाद्य संगीत अथवा मृदंग के बोल आते हैं और जिनका पाठ लय, ताल का ध्यान रख कर किया जाता है।[7] दसम ग्रंथ में भी इस छंद का प्रयोग किया गया है, जिसके साधारण पाठ करने से ही पता लगता है कि इसमें प्रयोग किए गए शब्द ताल और मृदंग के बोलों अनुसार है। पड़ताल रचना के शब्दों की लय भी भिन्न–भिन्न तालों के अनुरूप हैं। भारतीय संगीतकोश में दर्ज 'पड़ाल' नामक तकनीकी शब्द की परिभाषा इस प्रकार है, ''मृदंग के बोलों के विभिन्न शब्द या वाद्य जिस रूप में, हाथों द्वारा निकाले जाते हैं, उस को 'पड़ाल' कहा जाता है। दूसरे अर्थों के अनुसार किसे भी श्लोक की वाणी के छंद के अनुरूप अवनध वाद्य पर वादन उपयोगी बोलों को शब्द वाणी का 'पड़ताल' कहा जाता है।'[8] इस परिभाषा से पता चलता है कि मृदंग आदि के बोलों के धारणी कावि बोलों की रचना को 'पड़ताल' कहा जाता है। पड़ताल में ताल का बार–बार परताव भी इसी लयात्मिक्ता की विभिन्नता उपर आधारित है।

कुछ विद्वानों का विचार है कि अंतरे की अलग–अलग तुकों के गायन के लिए प्रयोग किए जाने वाले तालों की लय स्थाई की तुक के लिए प्रयोग किए गए ताल की

मात्राओं के समान हो। अंतरे की यह तुकें सम्बन्धित ताल के एक, दो या अधिक आवर्तनों की भी हो सकती हैं। कुछ रागी सिंह पड़ताल का गायन पाँच तालों में मानते हैं पर श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज पड़तालों में अन्तरे की तुकें दो या तीन भी मिलती हैं। उदाहरण के तौर पर राग मल्हार अधीन पड़ताल 'घनु गरजत गोबिंद रूप'[9] अंतरे की दो तुक हैं। इस लिए प्रत्येक पड़ताल में पांच तालों का प्रयोग नहीं हो सकता।

पड़ताल शैली की लयात्मिक्ता, विभिन्न तालों के प्रयोग से इस में कलात्मक पक्ष भारू दृष्टिगोचर होता है पर इस तरह नहीं है। पड़ताल एक कठिन गायन शैली है। पड़ताल के गायन लिए गायक को जहां ज्यादा अभ्यास की आवश्यकता है वहां ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियां का पूर्ण ज्ञान होना भी आवश्यक है क्यों जो इस गायकी की भिन्न–भिन्न परतों में इन गायन शैलियों के रंग भी नज़र आते हैं। रियाज़ से तालों का बदलाव सहज रूप में हो सकता है और गुरमत अनुसार शब्द प्रधान गायकी के लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।

पड़ताल में विभिन्न तालों के प्रयोग होने के बावजूद राग एक ही रहता है। पड़ताल का गायन करने के लिए शेष शैलियों की तरह रहाओ की तुक को स्थाई रूप में किसे एक ही ताल के अंतर्गत रखा जाता है। अंतरे की तुकों को विभिन्न तालों अधीन गायन उपरांत फिर स्थाई ताल में परता जाता है। अंतरे की तुक के पीछे ताल साथ तिहाई लगा कर स्थाई की तुक का गायन किया जाता है। अगर तिहाई न हो तो शब्दों का दुहराव करके या तान मुका मुकाया जाता है। इसके इलावा साधारण रूप में सम से स्थाई में प्रवेश किया जाता हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से पड़ताल गायन के स्वरूप का आभास सहज ही हो जाता है। इस तरह पड़ताल गायकी जहां कलात्मक उच्चता की धारणी है वहां वह भरपूर रियाज़, अमीर आवाज़ और संगीत का उत्तम ज्ञान चाहती है। गुरमत संगीत का यह गायन रूप श्री गुरू ग्रंथ साहिब की समूची वाणी के गायन मुखी स्वभाव को पूर्ण रूप में उजागर करता है और इसको सीधे तौर पर संगीत के साथ जोड़ता है। जो संगीत श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी की वाणी दर्शन गुरमत का अनुसारी है, वह गुरमत संगीत हैं। वर्तमान समय इस गायकी की सुरक्षा, संभाल और प्रचार करना इस परम्परा को फिर से सुरक्षित करने का यत्न होगा।

सहायक पुस्तक सूची

1.श्री मानवली रामकृष्ण कवि, भरत कोश, पृ. 344
2.नरूला, दर्शन सिंह (डा.) गुरबाणी संगीत बारे, पृ. 76
3.भाई काहन सिंह नाभा, महान कोश, पृ. 747
4.आदि ग्रंथ, पृ. 1296
5. वही , पृ. 1341
6. वही , पृ. 1200
7.भाई काहन सिंह नाभा, गुरू छंद दिवाकर, पृ. 82
8.चौधरी विमलाकांत राय, भारतीय संगीत कोश, पृ. 70
9.मलार महला 1, आदि ग्रंथ, पृ. 1273